रा. रा. शेठ पेस्तनजी सोराबजी
भुजवालानी खास फरमासथी
रचायल

वियोग विरह

कवि प्राणजीवन मोरारजी कृत
श्री कच्छ-भुजनगर.

મુદ્રિત.
અમદાવાદ—“આર્યોદય પ્રેસ.”

विभेश विरह.

(जामनगरके महाराजा जामसाहेब श्री सर विभाजी
के. सी. एस. आइ. स्वर्गवासकाव्य).

—:०:—

रा. रा. शेठ पेस्तनजी सोराबजी भुजवाला-
की खास फरमाससें

रचनार

कवि प्राणजीवन मोरारजी त्रिपाठी.

कच्छ-भुजनगर.

संवत् १९५१ इ. स. १८९५

અમદાવાદ—"આર્યોદય પ્રેસ."

५२००

विभेश बिरह

दोहा.

को विधिकों जग कह शके, बडो अशंकित एह;
भल अनभल अनभल भले, करतहीं काज अ-
छेह. ॥ १ ॥

कवित्त.

जाम श्री बिभेश कीनो स्वरग प्रयान तातें,
भयो शोक सागर अगाध छिति छायो है;
कीजें जाय काकों बिधि काज बिपरीत कीनो,
लीनो छीन राज-रत्न, दुःख यों उपायो है;
पल पल बीते मानों, बरस बितीत होत,
स्थल स्थल प्रतिस्थान बिरह बसायो है;
हाय ! हाय ! चेन ना परत चित प्रान कहे,
मानों कवि कोविदको मालवो लूटायो है. ॥२॥
प्रान कवि कोविद परीच्छक बिभेश वेश,

समर सुरेश[1] अवधेश[2] ज्यों उदारता;
संयुत सकल शुभ सलता सु दिव्य गुन,–
गनको निधान सार साहित निहारता;
खंडन अरीको, नव खंड प्रति छायो यश,
कहांलों बनाय कहुं बरनन बारता;
हाय ! हाय ! राय सोई स्वर्गमें प्रयान कीनो,
दीन जन दारिद जो जगतें बिडारता. ॥ ३ ॥
अलख भयोहै आज जाम श्री विभेश जग,
सुनके श्रवन प्रजा परम दुःख पायो है;
हेरे एक टक व्है अडोल स्वर भंग भयो,
बीते रंग राग उर आनंद नसायो है;
अरे! निरदई दई[3] दिलमें न दया कछु,
कीनो कहा काज! क्या दिखाई? क्या दिखायोहै?

---

૧ ઇંદ્ર. ૨ રામચંદ્રજી. ૧ દૈવ–વિધાતા.

गेह[1] गेह देत है उराहनो[2] अपार प्रान,

बानी[3] बर बाबा नाम नीको तैं लजायो है.॥४॥

૫૬ રાગ—"સિંધુ સુતાપતિ", એ સહ.

વિશ્વના પતિ! અકલ કલા તારીરે! ટેક

શ્રીવિભેશ, તજી સ્વદેશ, કિય પ્રવેશ, સ્વર્ગ બેશ;
શોક લોક ભારીરે. વિશ્વના૦ ૧

શું કહું તને ? જપે જહાન સારીરે;
શત્રુ સાલ, મતિ વિસાલ, દાન દયાલ, પ્રણુતપાલ;
નેક છટા ન્યારીરે. વિશ્વના૦ ૨

તોડી તેં પ્રભુ! પ્રીત જે પીયારીરે;
જાતિ જાણુ, સુમતિ ખાણુ, ગુણુનિધાન, નૃપ મહાન;
માનવાન ભારીરે. વિશ્વના૦ ૩

શોક સિંધુમાં નગર નર નારીરે;
જાતાં જામ, રૈ ગૈ હામ, થૈ નકામ, મનની કામ;
કલ્પના અમારીરે. વિશ્વના૦ ૪

दोहा.

जदपि अनूचित उचित नहि, कहा दैवपें जोर;

૧ ઘેરઘેર. ૨ ઠપકો. ૩ ખભા.

किंकरी किंकर सब रुए, सदन सदन चहुं ओर.

सोरठो डिंगली.

गयोज गुणनो ग्राग, त्याग करीज तमामनो;
सुहेन राग सुराग, जोया विण नृप जामने. ॥२॥

कवित्त बत्तीशा.

हाटके कपाट लगे, मंत्री जन सबे संगे,
रोन लगे घरी घरी, हाय! हाय! जायरे;
दैवनको कहा त्रोट, हमहींकुं महा खोट,
नीर बिनु मीन जीय तरफरात जायरे;
दशो दिश शुन्य भई, कोविदकी बान रही,
खान पान गयो संग, अब न रह्यो कांयरे;
शत्रुनको साला, शशि वंशको उजाला वर,
रनमल लाला श्रीविभेश स्वरग जायरे. ॥१

પદ. "જનની જીવોરે ગોપીચંદની"—એ રાહ.

જામ વિભેશ કેમ વીસરે, સાખો પાલનહારજી;
વિરહે મન વ્યાકુલ બને, આંખે આંસુની ધારજી. ટેક૧
અઢારસેં વ્યાશીવિષે, જન્મ ધર્યો સુખ ધામજી;
પૂરવ પુન્ય પ્રભાવથી, પામ્યા યશ અભિરામજી. જે
ઓગણીસેં ને આઠમાં, પામ્યા રાજ્યાસનજી;
ભોજ સમા ભોગ ભોગવી, સુખી કીધાં સ્વજનજી. જા૦૩
દાઝ સ્વદેશ દિલે ધરી, કીધાં કોટી કામજી;
વિદ્વદ્ વિપ્ર સુપાત્રને, આપ્યાં અગણિત દામજી. જા૦ ૪
રાણીવાસે રૂએ રાણીઓ, જપી જામ યશ જાપજી;
દાસ દાસી છે દયામણાં, કરે વિવિધ વિલાપજી. જા૦૫
પ્રેમામૃતના પાનથી, કર્યાં તે પ્રથમથી પુષ્ટજી;
પાછળ ખેદ પમાડિયા, વિરહ દવાનળ દુષ્ટજી. જા૦ ૬
વ્હાલાં સ્નેહી સૌ વિશ્વમાં, રાખ્યાં અહોનિશ પાસજી;
તરછોડિયાં તે તમામને, રૂએ નાંખી નિશ્વાસજી. જા૦ ૭
સ્વર્ગવાસ વિભેશનો, અઘટિત એ અપારજી;
મળવા ઇચ્છા મન રહી ગઇ, આંખે અશ્રુની ધારજી. જા૦૮

પદ. "ક્ષત્રીકલંક કેમ લેશોરે"—એ રાગ.

હાહાકાર થયો હાલાર, વિભેશ વીર સ્વર્ગે ! ગયોરે. ટેક
હાય! કેવો ક્રૂર કોપ કહેવાય! વિભેશ૦

વિધિ વિપરીતનો ન ઉપાય. વિભેશ૦ ૧
ગુણુપાત્ર કુલ છાત્ર સુજાણ; વિભેશ૦
સુખ સંપતિ સદન સિદ્ધિ ખાણ. વિભેશ૦ ૨
હતો કરણ અવર અવતાર; વિભેશ૦
કર્યો સુયશ સકલ સંસાર. વિભેશ૦ ૩
રંગ રાગથી અતિ રીઝનાર; વિભેશ૦
કોડે કાવ્યનોં કિમત કરનાર. વિભેશ૦ ૪
કરે કિંકરી કિંકર કલ્પાંત; વિભેશ૦
ક્ષણ પણ મન થાય ન શાંત. વિભેશ૦ ૫
વહે નેત્રથકી વારી પ્રવાહ; વિભેશ૦
ઉર ઊઠયો અતિ વિરહનો દાહ. વિભેશ૦ ૬
દુઃખ દાવાનલ કેમ બૂઝાય; વિભેશ૦
પાપીં પ્રાણ તજી પિંજર ન જાય. વિભેશ૦ ૭

પદ. રાગ શીઆનો કનરો.

હાય! મુઝાય અતિ મન મારૂં, વિધિનું નિરખી આ કૃત્ય નઠારૂં;
ચેન પડે નહિ નિશિ દિન મુજને, કોમલ કાંતિ કયાંથી નિહારૂં? ટેક ૧
જામ વિભેશ અવર સુરેશ, સ્વર્ગ ગયાથી વિશ્વ અકારૂં;
સોળ શૃંગાર સજી સુકુમાર, કિંકરી કહે સખી કોને દેખાડું? હાય. ૨
શુચિ સંયોગી, શુભરસ ભોગી, કરીને વિયોગી ગયા તે વિચારૂં,
શેષ સુરેશ અવર નરેશ યદપિ ધનેશ હૃદે નહિ ધારૂં. હાય૦ ૩

कवि वाच्य-कुंडलिआ.

कहे कवि सुन कंजरी! अब कां करौं आराम;
धाम धाम छायो करुन, जाते नृपति जांम;-
जाते नृपति जाम, रही सब हाम हियेमें;
पायो दुःख परिपूर्ण, पूर्व भव पाप कियेमें;
नहि तो क्यों यह होत जाम बिभेश बियोगरी?
उलटो भयो अदृष्ट! कविवर कहे कंजरी! ॥१॥

कंजरी वाच्य सवैया.

या उपचार सबें अवलोकत,
ऊठत झार अपार हियेमें;
जाम विभेश वियोग भयो अति,
ओ भव पूरन पाप कियेमें;
आज भई दुःखदाई दशा यह,
लेश न लाव संसार जियेमें;

अंक तें बंक लिखे बिधिना ! बहु,
क्यों निरसंक कलंक हियेमें. ॥१॥

कवि वाच्य सवैया.

धर्म धुरंधर अन्य पुरंदर,
सुंदर रुप सु शुद्ध वृत्तिको;
सो सुखदाई नरेश विभेशहीं,
स्वर्ग सिधाय तजी सुखनीको;
शोक समुद्र छिल्यो छितिपें,
अलयातें नहीं कल या पल जीको;
शोच कहा करियें चित कंजरी !
हे विधिना महा मंद मतीको. ॥२॥

सोरठा (डिंगली).

मोटी सुखरी मोट, छटकेतें छूटी गई;
खेरखरी आ खोट, वसुधा मध्य विभेश विण. ॥१॥

चितमां चिंता चोट, व्यापी विरह विसालसो;
खरेखरी आ खोट, वसुधा मध्य विभेश विण.॥२॥
आज गुरनरी ओट, ऊडी गई असमानमें.
खरेखरी आ खोट, वसुधा मध्य विभेश विण.॥३॥
दीधी दुःखरी दोट, दुरिजन साथ देखाडिये.
खरेखरी आ खोट, वसुधा मध्य विभेश विण.॥४॥
तारे विधि शुं तोट? लागी विधि वर लोकमां.
खरेखरी आ खोट, वसुधा मध्य विभेश विण.॥५॥
कीरतरो बडकोट, अमर कियो असमानलों.
खरेखरी आ खोट, वसुधा मध्य विभेश विण. ॥६॥
झूक्यां दुखरां झाड, आज अमो शिर ऊपरे;
धरणी विपत्ति धाड, वळगी जाम विभेश विण.॥७॥
शोचे सह संसार, कडवी हुई मन कामना;
करवुं शुं किरतार? वसुधा मध्य विभेश विण.॥८॥
जातां नृपति जाम, जन मनमें ज्वाळा जगी;

धरणी सुत सह धाम, खावा धाड खलकमां. ॥९॥

भरशीआ.

"घणी थइ छे राजाजी" ए राह,

हाय! हाय! जाम विभेश स्वर्गे सिधाया,
हाहाकार! हालार वरतायारे हाय० टेक. ॥१॥
अहां तहां रोवे नरनारी, वहे नेत्रसें बे पूर वारी;
उर अंतर जन अकुलायारे हाय० ॥२॥
शोक सिंधु अहो छलकाया, मन मनोरथ नाव डूबाया;
शूर सुबा विकल दरसायारे हाय० ॥३॥
हयशालामें हय मुरझाया, गजशालामें गज युंही भाया;
पशु पक्षी सरव दुःख पायारे हाय० ॥४॥
बडा कीया बिधि बूरा काम, ऊखार्या आरामका ठाम;
कल्पवृक्ष तें कैसें कपायारे, हाय० ॥५॥

सोरठो [डिंगली]

जातां नृपति जाम, फरामजी शोके फिरे
हिये रही सब हाम, विधि! गति तो बिपरीत है.॥१॥

दुहा.

लाख देण लखधीरसो, दान छतो दश देश;
गुन ग्राहक सुरपुर गये, वर वरदायी विभेश. ॥१॥

कवित्त.

स्वरग पयान हेतु कहत संक्षेप करी,
इंद्र अभिलाख हरिभजन द्रढायोहै;
तातें देव दुःखित विलोकी विधि लोग वीच,
अरज स्विकार सार सरव सुनायोहै;
रंच न उदास शांत होहु हम सत्य कहे,
मेरे मन जाम श्री विभेशकों बसायोहै;
कहे कवि प्रान कान देके कवि आन सुनो,

या तें महाराज़ रिपुपाक़ पद पायो है. ॥१॥

दुहा.

तज्यो प्राण नृप जामने, जानी जहान असत्य;
पुन्य प्रतापनसे लियो, अक्षरधाम सु सत्य. ॥१॥
संवत उन्नी शोंशि शॅरे, शुक्ल बिशाख बिचार;
गनपति चोथे दिन हुओ, हाहाकार हॅालार. ॥२॥

समाप्त.